ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org

An International Multidisciplinary Research E-Journal

भक्त कवियित्रियों: मीरा और आण्डाल की तुलना

Dr. Madhubhai M. Hirpara

Darbar Gopaldas Shiskshan

Mahavidayalaya Aliyabada

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org

An International Multidisciplinary Research E-Journal

कृष्ण भक्ति की मधुरतम उपासना के क्षेत्र में नारी कवियों मे मीरा ओर आण्डाल का स्थान अप्रतिम है । विशेषकर कान्ताभाव में डुबकर प्रेमाभत्कि को नये क्षितिजों पर स्थापित करनेवाली इन दोनों अभूतपूर्व कवयित्रियों की क्षमता में कोई दुसरी नारी परिलक्षित नहीं होती। संपूर्ण भारतीय भक्ति साहित्य मे त्याग ओर विसर्जन, उपासना ओर आराधना, पूजा ओर अर्चना की कोई अन्यतम प्रतिमा है तो वे हैं – मीरा ओर आण्डाल !

माधूर्यभाव मे इन दोनो कवयित्रियों – भत्कों का स्थान सर्वोपरि है । गिरिधर गोपाल के प्रति स्फुरित होनेवाला उनका बाल्यावस्था का प्रम, कालान्तर मे युवावस्था प्राप्त कर परिपक्व हो उठा था। ये दोनों ही उस मधुरा भत्कि के यश की एकान्त साधिकायें मानी जाती है, उनकी साधना ओर समर्पण भावना अप्रतिम है, अद्वितीय है ।

मीरा को बचपन में ही कह दियं गया था कि कृष्णा ही उसके पति हैं । फिर कालान्तर में राजकुल में उनका विवाह हुआ तो राजकुल के वैभव, ठाठ - बाट उसे सांसारिक बंधन में बाँध न सके । इस लोक के पति की अपेक्षा मीरा कृष्ण की प्रेयसी बनकर रहना उत्तम समझती हैं ।

म्हारो संवरो व्रजबासी जग सुहाग मिथ्या री सजनी, होगा ही मिट ज्यासी । वरण करयाँ
अविनाशी म्हारो काल व्याल न खासी ।

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org

An International Multidisciplinary Research E-Journal

मीरा भौर आण्डाल दोनों ही कान्ता भाव की जीवित मूर्ति मानी जाती है । प्रेम की पराकाष्ठा कांता भाव में होति हैं । मीरा ओर आण्डाल दोनों ने गोपियों की भाँति सब कुछ छोडकर गिरिधर गोपाल को कांत बनाया, यही कांताभाव हैं । मीरा ओर आण्डाल दोनों का काव्य उनके जीवन का साकार रुप हैं ।

गेय पदों के रूप में अभिव्यक्त अण्डाल ओर मीरा के गीतों के उद्गारों के गहन अध्ययन से स्पष्ट परिलक्षित होता है कि दोनों के मन में भी, कृष्ण, जिन्हें वे बचपन से अपना इष्ट देव ओर पति के रूप में स्वीकार कर चुकी थीं, उनके प्रति गहरा ओर आत्मीय प्रेम रह हैं । दोनों ही अपने को गौपिकाओं के प्रतीक के रूप में मानती हैं, ओर उनका हृदय श्री कृष्ण के साथ एकाकार होने के लिए कितना उत्कंठित एवं उद्रेलित हुआ हैं । आण्डाल गोपिका के साथ अपना तादात्स्य साबित कर लेती हैं इसका संकेत उनकी इस कल्पना से स्पष्ट हो जाता हैं जिस में अपने जन्म स्थान श्री बिल्लिपुत्तूर को ही गोकुल के रूप मे कल्पित कर लेती है । इतना ही नहीं वहाँ की कन्याओं को अहीर की कन्यायें - गोपिकायें ओर अपने को उनमें से एक गोपिका एवं श्री बिल्लिपुत्तूर के रंगमत्रार मंदिर को ही नन्दकोष का राजमहल तथा उस मंदिर मे स्थापित रामन्नार (भगवान विष्णु का तमिल नाम) की अचरवतार मूर्ति को श्री कृष्ण के रूप में भावित कर कृष्ण से भक्ति करती है । टीकाकार पेरिय -वाच्चान पिल्ले अनुसार आण्डाल अपने को एक गोपिका के रूपे में भावित कर अहीर बालिका ही के समान उतने चलने, व्यवहार करने तथा बातें भी करने लगती है ।

आण्डाल मानसिक रूप से गोकुल की गोपिकाओं के सारे अनुभवों से होकर गुजरती है ओर भगवान के अनन्यगतित्वम् के लिए प्रार्थना करती है । अपने को गोपिका मानकर जन्म जन्मान्तर तक कृष्ण के साहचर्य की कामना प्रकट करती है ओर साथ ही उनकी सेवा- कैंकर्य

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
An International Multidisciplinary Research E-Journal

की तीव्र कामना भी अभिव्यत्क क्रती है, जिसे वह जीवन का सबसे मुख्य लक्ष्य भी मानती है ।

एट्रैक्कुम् एकेलु पिरविक्कुम्

अन्दनोड् उट्रोमें आवोम्

उनक्के नाम आदचेयवोम् ॥

अण्डाल की कृतियों में प्राप्त यह गोपिका भाव की भत्त्कि कहाँ से आयी? हे श्रीमद् भागवत कै प्रभाव के हमें एसे स्वीकार करने में संकोच होता है, क्योकि श्रीमद् भागवत्त का प्रणयन आण्डाल कै काल कै बहुत बाद में हुआ है । तमिल की दीर्घकालीन काव्य-परम्परा के अनुसार तमिल प्रदेश मे प्रचलित कण्णन-नपिन्नै की लोककथाये | 'कुरदैकूत्' 'कुडक्कूतु'आदि लोकनृत्य एवं लोकनाटयों परंपराओं का ही स्पष्ट प्रभाव लगता है । आण्डाल काव्य में परिलभित इस गोपिका भाव के प्रेम पर ओर गहराइ से विचार करने की आवश्यकत्ता है । भारतीय कृष्ण् भत्त्कि साहित्य क विद्रानों कै लिए यह विचारणीय विषय हैं ।

मीरा ओर आण्डाल की विरह वेदना

दोनो भत्त्कों के पदों में मधुराभक्ति ही प्रमुख रूप से प्रकट हुई है । दोनो ने कृष्ण को अपने आध्यात्मिक प्रेमी के रूप मे माना है ओर अपने पदौ मे तथा गीतो मे परोक्ष रूप से इस सख्य भाव कौ प्रकट किया है । जब भक्ति ओर रत्ति दोनों एक रूप हौ जाते हँ तब वही प्रेम की अभिव्यक्ति का रूप धारण करते हैं । अभिव्यक्ति की ऐसी वेला में भक्त का मन प्रदीप्त हो जाता है | दौनों ने कृष्ण कौ अध्यात्मिक प्रेम के प्रतीक के रूप में माना है ।

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
An International Multidisciplinary Research E-Journal

उनका मधुरा भाव इन्द्रियजन्य नहीं, बल्कि इन्दरियातीत है । मीरा अपने अनेक पदों मे इस आत्मसमर्पण धाव की तीव्र अभिव्यक्ति करती:

हेर! मतौ दरद दीवाणी, मोरा दरद न जणे काई।

घायल की गति घायल जाणाँ के जिग लाई होई ।

आण्डालं अपनी मानसिक वेदना की अभिव्यक्ति स्पष्ट तात स्पष्ट रूप सै ओर कामदेव करती है:

अगर मुझे कृष्ण की पाद सेवा करने की अनुमति न मिले तो मेरा जीवन दुःखमय होगा ओर जो पाप लगेगा उसकें लिए आप ही उत्तरदायी होगे।'

आण्डाल के पदों मेँ कृष्ण के प्रति अनुरत्कि भाव के कारण उनकी तीव्र कामना के दर्शन होते है । यद्यपि मीरा ने भी अपने कई पदों मेँ कृष्ण के प्रति प्रेम के तीव्र भाव को अभिव्यक्त किया है, फिर भी उनका निवेदन परोक्ष ओर सूक्ष्म है । मीरा एक राजकुल् मेँ जन्मी थी ओर राणा कुल मे व्याही थी तथा बाद में अपने यौवन काल मं वैधव्य भोगने के लिए विवश हुई । संभवतः इस कारण से हमेँ उनकी पद्मावलियों मेँ सीधी, तीव्र ओर काव्यात्मक अभिव्यक्ति मिलती है । उनके काव्य में प्रेम की तीव्रता से युत्क उद्गारों को पाते है ।

आण्डाल ओर मीराबाई की पदावलिर्यो में अभिव्यक्त विरहजन्य वेदना ओर पीडा की अनुभूति स्पष्ट, मार्मिक ओर प्रभावशाली है । दोनों के लिए विरह सत्य नहीं, बल्कि संयोग ही सत्य है । उनके अधिकतर पदों मे संयोगावस्था का चित्रण ही अधिकं है । सच

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org

An International Multidisciplinary Research E-Journal

पूछा जाए तो आण्डाल अपने पदों में स्वप्न में कृष्ण के साथ हुए अपने विवाह का मार्मिक ओर सुन्द्रर वण्र्न् करती है । अपने एक प्रसिद्र् गीत में उसे यह विस्तृत रूप से समझाति है -

"मत्तलम कोट्, वरि संगम निन्नुद

मुत्तुडै दामम निरै तालन्द पन्दर कील

मेत्तुनन् नम्बि मधुसूदनन वन्देत्रै

कैतलम् पट्र कना कण्डेन तोकी नान्"

(विवाह मण्डप मेँ बाजे बज रहे है, शंख ध्वनि हो रहे है, मोती हीरे आदि से सजे सुन्दर ओर आकर्षक विवाह मण्डप के नीचे मेरा प्रिय नारयण आकर मेरा पाणिग्रहण कर रहा है, एसा सपना, है सखी! मँने देखा)

विरहावस्था मे दोनों भक्त अपनी मानसिक वेदना ओर् दर्द क्रो प्रकृति के माध्यम से अपनी विरहानुभुति को प्रकट करती हैं तो आण्डाल काले बादलों के माध्य से । संभवतः दोनों क लिए काला रंग श्यामसुन्दर का प्रतीक हैं मीरा विरह की तीव्र वेदना को काले कौए के द्रारा इस प्रकार व्यकत करती है -

प्रीतम कूँपतियों लिरहं, कौआ तू ले जाई ।

जाई प्रीतमजी यूँ यूँ कहीं रे, थाँरी विरहणी धान

खाई।

मीरां दासी व्याकुल रे, पिवपिव करत विहाइ

वेगि मिलो प्रभु अन्तरजामी तुम विन रहो न

जाई।

कृष्ण कै पास अपना संदेश भेजने के लिए मीरा कलम हाथ में उठा लेती है ओर जब लिखने का प्रयत्न करती है तौ उसका काथ काँपने लगता है । कृष्ण का स्मरण करते ही वह अपनी भावनाओं को वश में कर नहीं पाती ओर साथ ही अपने आँसुओं को भी | वह कौए के कहती है - "तू मेरे शरीर की पीडा ओर म्न कनै वदन कौ

तौ देख ही रहा है । मेरे द्रिच्न क

विरहजन्य पीड ॐ दन अ= अदन ध्वना प

तय =क्र लिखू, तिख्योरीन नवर

ल्त कर कंपन है, नैनन हैं इ्यड

हमारी विपत तुम देख चले ऊर्धां,

हरिज् सुँ कहियो जाय ।

मीराके प्रभु गिरिधर नागर दरसन दीजो आय।

मीरा विरह वेदना कै कारण रात कौ नींद नहीं ले पाती ।

"रोवत रोवत डोलती, सव रैण बिहावों जी ।

भूख गयां निदरां गयां, पापी जीव णा जावां जी ।'

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA
An International Multidisciplinary Research E-Journal

आण्डालं कोयल के द्वारा अपनी शारीरिक पीड़ा ओर मानसिक वेदना दोनों को मार्मिक शब्दावली में अभिव्यक्त करती है -

"एनवु उरूकि इनवेल नेडुंकण्कन

इमै पोरुन्दा पलना कम्

तुन्वक्कडल पुक्कु वैकुन्द नेन्वदुं ओर

तोणि परादु उल् किस्चेन्

अन्वुडैयारे पिरिवदु नोयद्

नीयु मरिदि कृचिले'-

मीरा कृष्ण से निम्न प्रकार की शिकायत करती है - है भगवान ! तुम्हारे लिए ही मैंने संसार की सारा वैभ्व त्याग दिया है । मैं तुम्हारी दासी हूँ, तुम मेरी उपेक्षा नहीं कर सकते हो या मुझे छोड़ सकते हो -'

"थोर कारण कुछ जग छोड्यां,

अव ये क्या बिसरावाँ ।

विरह व्यथा व्यापा उर अन्तर,

ये आस्यों णा बुझावाँ ।'

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
An International Multidisciplinary Research E-Journal

मीरा एक क्षण के लिए भी अपने हृदय में चूँकि कृष्ण का वियोग सहन नहीं कर पाती। चूँकि वह कृष्ण के परमपुरुष रूप को देखने की तीव्र लालसा से युत्तक है, अतः उसे वियोग की तीव्र अनुभूति हती है। वह कृष्ण के बारे में कए `शिकायतें करती है, मगर उसके पासं कई बार संदेशा भजती हैं। मगर वे हैं मौन धारण किये हूए ओर जवाब तक देने की परवाह नहीं करते।

आपतो जायँ विदेशा छाय जिवडा धरत न धीर।

लिख लिख पतियाँ संदेशा भेजुँ

कब घर आँव महारापीव।

काले बादलों को देखकर वह उससे कृष्ण का संदेश पाने के लिये दौड जाती है। मगर प्रकृति तो प्रकृति हीं हैं

"मतवाले वादर आये रे।

हरि को सनेसा कबहूँ न लये रे !!

इस प्रकार आण्डाल ओर मीर दोनो प्रकृति में चेतनता का अनुभव करती है।

आकाश मे तैज दौडते हूए बादलों कौ देखकर आण्डाल को अपने प्रियतम कृष्ण का स्मरण हो आता है।

कण्णीरकल मुकैवकुवटिल तुलि चोर चोखेनै

पेण्णीर में ईड अष्िक्कुमिद् तमक्कोर पेरूमैये।

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
An International Multidisciplinary Research E-Journal

एक दूसरे पद में भी वे इस प्रकार का भाव व्यकत करती है

ओलिवण्णम् वक्ैचिन्त उरकानोडिवे एल्लाम्

एलिमैयाल इह एलन ईड अकि पोचिनवाल

-

कुलित अरुवि वेकटततु एन् गौविन्दन गुणंपाडि

अचियत्त मेकंलाल ! आरधि काततिरुप्पेने ।

अपनी गहरी मनोवेदना के क्षणों मे आण्डाल भी मीरां की भांति ही अपने प्रियतम पर दोष डालती है -

मद याने पोलेन्दु मामुकिलकल ! वेंकटत्तै

यदियाक वाक्छवीरकाक ! णम्पणैयन् वातें एत्ते ।

गति येन्नुम् तानावान् करुतातु ओर पेण कोडिये

वदै चेयूचानेन्नुम् चोल वैयकत्तार मदियारे ।

आण्डाल कृष्ण का साहचर्य चाहती है ¡ अपने अनेक पदों में विरह वेदना व्यक्त करती है । उनसे उनके हृदय के निगढतम "भाव, उनकी तीव्र वेदना औॅर पीड़ा उनकी बेचैनी आदि का स्पष्ट चित्र सामने उभर आता है -

“उलंगु उण्ड विक्कनि पोल उक मेलिय पुकुनदु एतै,

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
An International Multidisciplinary Research E-Journal

नलं कोण्ड नारणक्कु एन नटलै नौय् चेप्पुभिने |

श्री वैष्णव संप्रदाय मँ अच्छे खाध् पदार्थो पकवानों को नैवेध के रूप मे भगवान को समर्पित करने की प्रथा प्रचलित है । मीरा ओर आण्डाल दोनों ही एक अच्छे भोज के लिए कृष्ण को निमंत्रण देती है ! मीर छप्पन भोग ओर छत्तीर एकार के व्यंननो से युत्क राजभोज के लिए श्रीकृष्ण का आहवन करत्ती है, जो केवल व्यक्तियों के निमित्त परोसा जाता है । उन्हें श्री कृष्ण के लिए जल्दी आने का निमंत्रण देती हैं

"ये जीम्यां गिरिधर लाल

मीरांदासी अर्जकर्यो छे, म्हारो लाल दयाल ।

छप्पन भोग, छतीसवाँ व्यंजन, पार्वां जब प्रतिपाल ।

राजभोग आरोग्यां गिरिधर सम्मुख राखां ताल ¦

मीरांदासी सहणां ज्यारसी, कौज्यां वेग निहाल ।।'

यह क्या ही आश्चर्यजनक समानता है कि आण्डाल भी इसी प्रकार का निमंत्रण अपने इष्टदेव प्रियतम कृष्ण को देती है जिसमें नवनीत ओर क्षीरात्र् का भोग चढाने की बात आती हैं ।

"नारम् नरुम् पोङिल मालिरु चौलै नम्दिक्कु नान् ।

नूरु तडाविल वेष्णै वाय् नरेन्दु परवि वैतेन्

नूर तडा निरैन्द वक्कार विडिसिल स्नेन्

एरु तिस्बुडैयानिनरु वन्दु इवै कोल्न्डुकोलो ।"

इस प्रकार आण्डाल अपने भौतिक, आधिभौतिक पार्थिव एवं उपार्थिव तथा लौकिक एवं अलौकिक सुखों को पूर्णरूपेण कृष्ण के निमित्त समर्पण कर देती है । वह दिव्य ओर अलौकिक आनन्दानुभूति की कामना करती है | आण्डाल एवं मीरा दोनों भक्तौ ने कृष्ण से मिलने की अपनी तीव्र उत्कंठा का संकेत अपने अनेक पदों मे व्यक्त किया हैं

"दादुर ओर पपीहा बौल्यां कोडल मधुरां साज ।

उमंग्यो इन्द्र चहुँदिसि बरसा दामिणी छोड्यां लाज ।

धरती रुप नवां नवां धरयां इन्द्र मित्रण रे काल ।

मीरां रे प्रभ गिरिधर नागर, वेग मिल्यो महाराज ।

प्रकृति, विरहिणा नारी के हृदय मेँ विरह वेदना को, उदीप्त करती है ओर उसकी भावनाओं को तीव्र कर देती है। अण्डाल प्रफुल्लित पुष्पित्त फूलों से अपने विरह ताप को शांत करने का निवेदन करती है -

'तारक्कोडि मुल्लैककुम तवच्छ नके काुकिन्र

कारकोल पड़ाक्कल निर् कक्छरि सिरिक्कवरियेन् ।'

मीरा तो प्रकृति की हर दस्तु मं कृष्ण को देखती है । वसन्त ऋतु मेँ होली उत्सव के अवसर पर ग्रामीण लोग झांझ मृदंग, मुरली, इकतारी आदि विभिन्न बाजे इजाकर आनन्दमग्नं होकर गाते ओर नाचते है । इन बाज स निकलने वाले संगीत की मधुर ध्वनि मीरां के मन में विरह ताप उत्पन्न कर देती है ओर वह इस प्रकार रूदन करती है ।

"वाज्यं झांझ मृदंग मुरलिया, बाज्यां कर इकतारी ।

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
An International Multidisciplinary Research E-Journal

आयां बसन्त पिया घर णारी म्हारी पीड़ा भारी ।।'

मीरा कष्ण पर बेईमान होने का दोषारोपण लगाती है । यह कहती है - मैं तो तुम्हारे प्रेम में दीवानी हो गयी हुँ मैंने तुम्हारे लिए आत्म समर्पण कर दिया है । मैं प्रेम मार्ग के अतिरित्त्क दुसरा कोए मार्ग् नहीं जानता । पहले तुमने ही प्रेम का अमृत मुझे पिलाया था, ओर अब विरह ताप के रुप वि मैं विष पिलाने हो । क्या यही प्रेम का नेक रास्ता है ?

जाणां रे मोहना, जाणां थारी प्रीत ।

परमभक्ति से पडो म्हाँरो ओर न जाणां रीत ॥

इग्रित पाई विष क्यूँ दीन्या कूँण गाँव री रीत ।

मीरां रे प्रभु हरि अविनासी अपनो जनसरे मीत ।।

मीरा ओर आण्डाल की कृतियों के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट है कि दोनों ही कृष्णभक्त कवियित्रियाँ भगवान का संपूर्ण सानिध्य चाहती है | उनकी एकमात्र तीव्र कामना, और मनोभिलाषा कृष्ण को पति रूप में प्राप्त करने की रही है । दोनों ने सांसारिक इच्छाओं को त्यागकर कृष्ण क लिए आत्मसमर्पण करने की मनोकामना को अभिव्यक्त किया है ओर जन्म जन्मान्तर के लिए विराटत्व में एकाकार हौने की तीव्र क्लः व्यक्तं की है । भगवान नं गान्मक् संबधं लिए समर्पित कर दिया ओर इस प्रकार जीवेन कै परमोदैश्य कौ प्राप्ते कर लिया है ।

इन दोनों भक्त कवियों के पदों के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि वैष्णव भक्ति का प्रत्येक तत्त्व उनमें विधमान है ओर दोनों ने आत्मसमर्पण को ही चरमसिद्रि का

रहस्य माना है । भक्तिमार्ग में आत्म निवेदन या आत्म समर्पण शब्द का प्रयोग शरणागति या प्रपत्ति के निमित्त भी होता है । भावान के मनभावनकार्य करना, असत् कार्य का अप्रिय वचनों का परित्याग, भगवान के गुण एवं महिमा का मान करना, दीनता या दैन्य भाव से उसकी स्तुति करना आदि । आण्डाल ओर मीरा की भक्तिभावना मेँ इन लक्षणो कै दर्शन होते है । भगवान के शील, शालन्य गुणों की महिमा का वर्णन आण्डाल के पदों की विशिष्टता है । भक्ति भावना से परे अन्तर्जगत का जो चित्रण दोनों ने किया है, वह भक्ति साहित्य की अनुपम देन हैं ।